रंगाई व वार्निश

इसका उपयोग डाई – वार्निश आदि बनाने में भी किया जाता है।

बायोडीज़ल

रतनजोत के बीजों से निकलने वाले तेल बायोडीजल को सीधे में मिलाकर डीज़ल की तरह उपयोग किया जा सकता है।

पौधे का वर्ष	फसल की उम्मीद वर्षा की फसल (किग्रा प्रति हेक्टर)	सिंचाई की फसल (किग्रा प्रति हेक्टर)
1	&	250
2	250	1000
3	1000	2500
4	2000	5000
5	3000	8000
6 और बाद में	4000	12000

उपज

दूसरे साल से और उपज प्रति हेक्टर 0.5 से 10 टन तक हो सकती है। अगर हम कम से कम कीमत 4 रुपया प्रति किलो भी मानें तो यह हमें 48000 रुपये की आमदनी दे सकता है।

रतनजोत खेती के मुख्य लाभ

1. **किसी भी प्रकार का जानवर गाय, भैंस, इसे नहीं खाते हैं।**
2. **बहुवर्षीय सुखारोधी लगातार 40-50 वर्षों तक उत्पादन देता है।**

3- fdlh jklk;fud fdVuk'kd dh t:jr

नोट :-

रतनजोत खेती की जमीन पर नहीं लगावें केवल मेड़ पर ही लगावें।

रतनजोत कच्चा नहीं तोड़े, पुरा पके फिर पैसे जोड़े

मुद्रक : फाईन आर्ट प्रिन्टर्स, जाटवाड़ी, उदय. फो.: 0294-2411406, 9828576207

रतनजोत

तेल उत्पादक वृक्ष

वैज्ञानिक नाम

ओनोस्मा एकिड्स

राजस्थान वन उपज संग्राहक एवं प्रशोधक समूह समर्थक समिति

282, पुराना चुंगीनाका, फतेहपुरा, उदयपुर (राज.)

फोन एवं फैक्स : 0294-2451478

email: samarthak@sancharnet.in

रतनजोत

परिचय

इसका पौधा कड़वा तीक्ष्ण मृदुविरेचक, किटनाशक तथा विषविकार को दूर करने वाला है।

पौधे का विवरण

जेट्रोफा एक सदाबहारी, सूखे में भी अच्छा बढ़ने वाला पौधा है। यह आसानी से लगाया जा सकता है। तेजी से बढ़ता है और करीब 50 साल तक बीज देता है। जिसके बीजों में 30 से 37 प्रतिशत तक तेल होता है। इसके तेल का इस्तेमाल बिना रिफाईन किये ईंधन के रूप में किया जा सकता है। एक साधारण डीज़ल इंजन के लिये इसके तेल को ईंधन के तौर पर सफलतापूर्वक जांचा गया है।

प्रसार

यद्यपि इस पौधे के जन्म के बारे में कोई निश्चित विचार नहीं है, पर ऐसा विश्वास है कि यह मैक्सिको और मध्य अमेरिका में पैदा हुआ होगा। अफ्रीका और एशिया में भी इसकी शुरूआत हो गयी है और अब पूरे विश्व में इसकी खेती होती है। यह सूखे में बचने वाली प्रजाति है और बहुत कम वर्षा में भी पनप जाती है। वर्तमान फैलाव से पता चलता है कि जेट्रोफा उन इलाकों में ज्यादा चलता है जहां वर्षा 30 से 100 सेन्टीमीटर होती है। समुद्री सतह से 500 मीटर तक के इलाकों में जहां वार्षिक तापमान और 20 डिग्री सेल्शियस से ऊपर के इलाकों में अच्छा पनपता है। थोड़ा पाला भी सहन कर लेता है तथा पानी के निकास वाली धरती पर या बहुत कम उपजाऊ जमीन में भी अच्छा पैदा होता है।

पौधे की खूबियाँ

यह एक छोटा पेड या झाड़ी है, जिसकी छाल आसमानी रंग की है, इसके कटने पर इसमें से सफेद से रंग का पतला दूध निकलता है। साधारणत: यह तीस से पांच मीटर की ऊँचाई तक पहुंचता है, परन्तु अच्छी हालत में यह आठ से दस मीटर तक पहुंच जाता है।

पत्तियाँ

इसके पत्तें बड़े हरे से हल्के रंग के होते हैं। इसके पत्तें के तीन से पांच कोने होते हैं,

फूल

फूल शाखा के अखिर में अकेले निकलते हैं। मादा फूल थोड़े बड़े होते हैं और गर्मी के मौसम में निकलते हैं। जहाँ लगातार बढ़ोतरी होती है वहां मादा फूलों में बढ़ोतरी होती है।

फल

जब सर्दी में झाड़ी पता विहीन हो जाती है तो फल उगने लगते हैं जहाँ जमीन में नमी अच्छी है और तापमान ऊचा है वह एक से ज्यादा फसल भी हो सकती है। एक फूल के गुच्छे में करीब दस फल होते हैं। जब बीजों की थैली पक जाती है तो हर थैली से तीन बिज निकलते हैं। इसके पेड़ सूखे मौसम में पत्ते छोड़ देते हैं। नम मौसम फूल जाते हैं, बीज, फूल निकलने के बाद तीन महीने बाद पकते हैं। पौध शाला के लगाये पौधे अच्छी वर्षा से अच्छी बढ़ाई से पहली वर्षा, के बाद भी फल आ सकते हैं। फूलों में बीज पड़ने की प्रक्रिया कीट पतंगों से होती है।

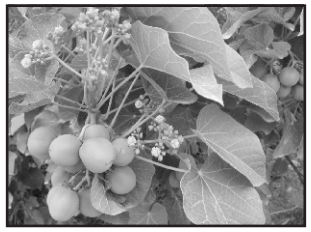

जलवायु

जेट्रोफा हर जगह उगता है। पथरीली, बालू, खार वाली जमीनों में भी, चट्टानों की दरारों में भी उग जाता है। इसका पतझड़ पेड़ इर्दगिर्द नमी बना देता है जिसमें केंचूए ज्यादा सक्रिय हो जाते हैं, और उससे पौधे के पास की जमीन सक्रिय हो जाती है। पानी के निकास वाली जमीन जहाँ हवा पानी मिलती हो, इसके लिए अच्छी है। कम उपजाऊ जमीन भी इसकी बनावट के लिए उपयुक्त है। भारी जमीन में इसकी जड़ें कम जमती है, जेट्रोफा कहीं भी पनप जाता है।

अन्य उपयोग

तेल उद्योग :- रतनजोत के बीज का तेल, साबून, लुब्रिकेंट, मोमबत्ती आदि बनाने में उपयोग किया जाता है।

औषधीय उपयोग

रतनजोत (जेट्रोफा) में ''जेट्रोफिन'' नामक तत्व पाया जाता है जो कि कैंसर